प्राक्कथन

KAR LIBRARY
APUR

मनुष्य के हृदय में अन्यों को जानने और अपनी कहने की जो उत्सुकता जागती है, वही कहानी को जन्म देती है। इसी उत्सुकता से हिंदी कहानी का जन्म हुआ है। और नई-कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सहज-कहानी, समांतर कहानी, जनवादी कहानी, सक्रिय कहानी, समकालीन कहानी आदि विभिन्न आंदोलनों के कारण हिंदी कहानी का तीव्र गति से विकास हुआ है। आदि से अंत तक कहानी का मूल स्त्रोत एक ही है, लेकिन परिस्थिति के अनुसार जो बदलाव की अपेक्षा व्यक्त की गयी है, वे ही आंदोलन के रूप में उभर गये है। उन आंदोलनों द्वारा उस काल का बोध कराया गया है।

समकालीन कहानी आंदोलन भी इसी प्रकार का एक आंदोलन है। इस आंदोलन से समकालीनता का याने आधुनिकता का बोध होता है। अत: एक ही आंदोलन में अनेक कहानीकार अपनी कहानियों को जन्म देते हैं। उन कहानीकारों की कहानियों में अनुभव के स्तर पर गुणात्मक बदल रहता है। लेकिन उस आंदोलन की प्रवृत्तियाँ मात्र सभी कहानीकारों में समान होती हैं।

धीरेन्द्र अस्थाना समकालीन कहानीकार हैं। समकालीन कहानी आंदोलन की सभी प्रवृत्तियाँ उनकी कहानियों में है। लेकिन उनकी हानियों में विचित्र प्रवृत्तियों में समयगत सत्य को साकार करने की दृष्टि से आवश्यक सामर्थ्य दिखायी देती है। इस दृष्टि से आए हुए गुणात्मक बदलाव को साकार करने की दृष्टि से समकालीन कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीनता और अस्थाना की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीनता के द्वारा आधुनिकता बोध कराने की दृष्टि से अस्थाना की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीनता पर शोध-प्रबंध लिखने की इच्छा मैंने अपने निर्देशक श्रध्देय डा॰ सु॰गो॰गोकाककरजी के सामने व्यक्त की और उन्होंने सहर्ष "धीरेन्द्र अस्थानाजी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कहानी का विश्लेषण।" विषय पर शोधकार्य करने की मुझे अनुमती दी।

समकालीनता याने अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केंद्रीय महत्त्व रखनेवाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है। समकालीनता में युग-बोध के तकाजों के साथ अमानवीय स्थितियों, व्यक्तियों और दानवीय शक्तियों का निर्मम विश्लेषण रहता है। मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना और दानवता से मुक्ति के लिए संघर्षकामी विचारों का प्रस्फुटन रहता है। समाज में फैले हुए वैचारिक धुंध को फाड़ कर स्वस्थ

और तेज रोशनी देना ही समकालीनता है।

व्यक्ति का अस्तित्व पात्र, काल और देश के त्रिकोणों से कई आयामों आकर्षित, विकर्षित अथवा प्रभावित होता है। इसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति की "स्वचेतना", "संवेदनशीलता"को घात-प्रतिघातों के झटकों या दबावों का सामना करना पड़ता है और व्यक्ति-मन प्रतिक्रिया से भर उठता है। वह अपने काल, स्थान अथवा देश को या जिन पात्रों के कारण उसकी संवेदना झकझोरी जाती है, उन्हें सही संदर्भों में समझने, पहचानने और स्थितियों को यथासंभव अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा करता है।

इस दिशा में उसे कई स्तरों पर आंतरिक और बाह्य दबावों को भोगना और झेलना पड़ता है। अंतर्बाह्य दबावों को भोगने और झेलने के क्रम में वह कई मीठे-तीखे अनुभवों की पुंजी बटोरता है। वह अपने सामयिक युग की विसंगतियों और अंतर्विरोधों को परखता है, उनके मुक्ति की कामना करता है। वह हर कीमत पर अपने अस्तित्वरक्षण और विकास के लिए प्रतिबध्द होता है। इसलिए सबसे पहले उसकी दृष्टि मौलिक आवश्यकताओं और वास्तविकताओं पर स्वाभाविक रूप से जाती है। जिस व्यक्ति में चेतना और संवेदना जागृत रहती है, उसी मनुष्य के पास ऐसी दृष्टि-संपन्नता रहती है।

एक समकालीन व्यक्ति के लिए सचेतन और संवेदनशील होना स्वाभाविक है। इसके लिए उसके पास वर्तमान में भूत और भविष्य की सही समझ होना चाहिए। साथ ही भूत में वर्तमान एवं भविष्य और भविष्य में भूत तथा वर्तमान काल के प्रवाह की सही समझ होना चाहिए। और अपनी चेतना, संवेदना और काल-बोध की पूरी समझदारी के साथ जन-विरोधी ताकतों के खिलाफ सशक्त लड़ाई के लिए सामूहिक मोर्चा बन्दी की तैयारी करना चाहिए और स्वयं मनुष्य को इस मानवीय पुण्य-युध्द में हिस्सेदार होना चाहिए। ये सभी समकालीनता की शर्तें हैं।

इन्सान मूल्यवान जिन्दगी जीने के लिये उन वर्गों और शक्ति-समूहों को ध्वस्त करने के लिये आगे आये, जो यथास्थिति या मूल्यहीनता के लिए उत्तर-दायी हो। इस प्रकार समकालीनता मात्र पतन का साक्षात्कार या "पतन" में भागीदारी नहीं है बल्कि निहित स्वार्थों के विरुध्द उठ खड़े होने और सक्रिय संघर्ष करने में समकालीनता है।

निहित स्वार्थों के विरुध्द आम जनता के सक्रिय संघर्ष को कहानियों में लाने का श्रेय समकालीन कहानीकारों को मिलता है। समकालीन कहानी परिवेश,

वस्तु-शिल्प और भाषा-शैली की दृष्टि से काफी विकसित हो गयी है। अपनी नई ताजगी के साथ वह आम आदमी के जीवन से जुडी है। अत: युगों से उपेक्षित, अपमानित और दमित दलित वर्गों की निजी विषा की अभिव्यक्ति है। समकालीन कहानी में युगीन महत्त्व के साथ समकालीनता साकार हुई है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में धीरेन्द्र अस्थाना की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कहानी का विश्लेषण करके समकालीन कहानी में युगीन महत्त्व के साथ अभिव्यक्त समकालीनता में जो गुणात्मक परिवर्तन आया है; उस गुणात्मक बदलाव को लेकर आधुनिकता का बोध कराया गया है यह करते समय विषय को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय के लिए स्वतंत्र शीर्षक दिया गया है। विशिष्ट मुद्दों के साथ शीर्षक याने विषय का विश्लेषण किया गया है। अंत में उपसंहार के रूप में चारों अध्यायों के सारांश के द्वारा विषय के उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है और इस लघु शोध प्रबंध की उपलब्धियों को भी बताया गया है।

पहले अध्याय में "समकालीन कहानी से तात्पर्य" शीर्षक के द्वारा पहले समकालीनता का अर्थ बताया गया है। उसके बाद समकालीनता की व्याख्या बतायी गयी है। अर्थ और परिभाषा से समकालीनता का तात्पर्य स्पष्ट किया गया है। समकालीन कहानी आन्दोलन का उदय तथा स्वरूप बताकर आंदोलन की सीमा रेखा बतायी गयी है। अंत में समकालीन कहानी की विशेषताओं को निश्चित किया गया है। उन विशेषताओं के द्वारा आगे का विषय विवेचन है। अत: प्रबंध की मर्यादा को ध्यान में रखकर समग्र आंदोलन को केवल छ: विशेषताओं को यहाँ लिया गया है। प्रत्येक विशेषता की अभिव्यक्ति का स्वरूप बताकर आगे समकालीन कहानीकारों का नाम निर्देशन किया है। इस प्रकार समकालीन कहानी से तात्पर्य को स्पष्ट किया गया है।

दूसरे अध्याय का "हिंदी कहानी साहित्य में समकालीनता" नामक शीर्षक है। इसमें "समकालीन कहानी:युगबोध का संदर्भ "- डॉ.पुष्पपाल सिंह और "समकालीन रचना और यथार्थ"- सतीश जमाली इन दो ग्रन्थों में चर्चित रचनाकारों की रचनाओं के उल्लेख हैं। इन रचनाओं में पहले अध्याय में बतायी गयी समकालीनता की विशेषताओं को ढूँढने का प्रयास किया गया है। यह करते समय पहले

अध्याय की छ: विशेषताओं में प्रत्येक विशेषता में चित्रित छोटी-मोटी समस्याओं का उल्लेख किया गया है। और इन छोटी-मोटी समस्याओं का चित्रण जिन रचनाकारों की रचनाओं में दिखायी देता है उन रचनाकारों का नाम और उनकी रचनाओं का केवल नाम निर्देश किया है। उस समस्या का चित्रण जिस रूप में हुआ है, उसका स्वरूप भी दो-टूक वाक्यों में बताया गया है। इस प्रकार हिंदी कहानी साहित्य में समकालीनता को साकार किया गया है।

तीसरे अध्याय में "समकालीन कहानी की विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में अस्थाना की कहानियों की समीक्षा" नामक शीर्षक के द्वारा अस्थाना के कहानी संग्रहों और संग्रहों की कहानियों का उल्लेख किया गया है। पहले अध्याय में बतायी गयी समकालीन कहानी की विशेषताएँ और दूसरे अध्याय में उन विशेषताओं के अंतर्गत चित्रित समस्याओं को अस्थाना की कहानियों में ढूँढा गया है। जिस रूप में समस्याओं का चित्रण हुआ है, उसे भी बताया गया है। समीक्षा के द्वारा समकालीन कहानी की विशेषता और समस्याओं का चित्रण अस्थाना की कहानियों में किस प्रकार से चित्रित किया गया है; उनके चित्रण में जो गुणात्मक अंतर आया है, उसे दिखाया गया है। अंत में यह दिखाया गया है कि अस्थाना की कहानियाँ अपनी कौनसी विशेषता के कारण समकालीन कहानी में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

अंतिम, चौथे अध्याय में "धीरेन्द्र अस्थाना की कहानियों में समकालीनता" नामक शीर्षक से अस्थाना की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीनता को साकार किया गया है। यह करते समय कहानी-कला के आधार पर अस्थाना की कहानियों को विश्लेषित किया है। कथानक में लाये गये प्रसंग, पात्रों के चरित्र-चित्रण में लायी गयी बातें, संवेदनशीला, भाव-भावनायें और विचारों की अभिव्यक्ति में समयगत सत्य को दर्शाया गया है। संवाद कला के अंतर्गत सांकेतिक, भावात्मक, मनोवैज्ञानिक और यथार्थ के महत्त्वपूर्ण प्रयोगों को स्पष्ट किया है। देश काल वातावरण और भाषा के स्वरूप को साकार करने का प्रयास किया गया है। शैली के अंतर्गत वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, स्वप्न और मनोविश्लेषणात्मक शैलीयों का सफल प्रयोग के द्वारा समकालीनता की अभिव्यक्ति को स्पष्ट किया है। इन सभी बातों से अस्थाना के यथार्थ को देखने की दृष्टि को साकार किया है। समय का परिवर्तन जीवनानुभव की गतिशीलता में स्थायित होता है। इसलिए

इसलिए अस्थाना की दृष्टि में जो समकालीनता है, उसकी अभिव्यक्ति की गयी है।

उपसंहार में दो-टूक वाक्यों में कहानीकार का परिचय कराया गया है। समकालीन कहानी से तात्पर्य बताया है। आधुनिकता बोध से आशय को स्पष्ट किया है। हिंदी कहानी साहित्य में अभिव्यक्त समकालीनता की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को बताया है। उसके बाद समकालीन कहानी की विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में अस्थाना की कहानियों की समीक्षा से ... उत्पन्न निष्कर्ष की विशेषताओं को बताया है। अंत में अस्थाना की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीनता के सारांश को बताकर, समकालीन कहानीकार की और अस्थाना की दृष्टि में समयगत परिवर्तन के साथ जीवनानुभव और बदले हुए यथार्थ को देखने की दृष्टि में आए गुणात्मक बदलाव को स्पष्ट कियाक है। साथ ही अस्थाना की कहानियों की उपलब्धियों को बताकर संभावनाओं की ओर निर्देश किया गया है, जिसका लाभ भविष्य के अध्येताओं के लिए होनेवाला है।

इस प्रकार लघु-शोध प्रबंध में विषय को प्रस्तुत किया गया है। अतः इस लघु शोध प्रबंध की निम्न उपलब्धियाँ हैं।

१] शिवाजी विश्वविद्यालय में समकालीन कहानीकार धीरेन्द्र अस्थाना की कहानियों पर शोध कार्य को प्रारंभ करनेवाला पहला प्रबंध है।

२] कहानी विश्व में छिपे हुए महत्त्वपूर्ण और वास्तव जीवनानुभव को साकार किया गया है।

३] अस्थाना जैसे कहानीकारों की समयगत परिवर्तन के साथ यथार्थ को देखने की एक निस्संग दृष्टि की अभिव्यक्ति है।

४] समकालीन कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीनता में आए गुणात्मक परिवर्तन के द्वारा आधुनिकता का बोध कराया गया है।

५] विषय की प्रस्तुति चार-अध्यायों में है। और उपसंहार के रूप में निष्कर्ष प्रकट किए गए हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
KOLHAPUR

६] समकालीन कहानी की विशेषताओं में विभिन्न समस्याओं को लेकर उनके बदलते स्वरूप और उसके परिणामों के साथ आधुनिकता बोध का स्वरूप बताया गया है।

७] शोध-प्रबंध के प्रारंभ में कहानीकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व लिखने की परंपरा को तोडकर एक परिवर्तन किया है।

उपर्युक्त प्रधान उपलब्धियों के साथ शोध-प्रबंध की रचना की गयी है।

:: ऋण निर्देश ::

इस लघुशोध-प्रबंध का प्रयास मेरे श्रध्देय गुरुवर्य डा॰गोकाककरजी के कुशल निर्देशन का ही प्रतिफलन है। मेरा यह सौभाग्य है कि उनके जैसे कुशल निर्देशक मुझे प्राप्त हो गये। डा॰गोकाककरजी के आत्मीय सहयोग और उचित मार्गदर्शन के कारण मैं यह शोधकार्य पूरा कर सका। इस ऋण से मैं कभी मुक्त नहीं हो सकता।

इस शोध कार्य को उचित दिशा देने का कार्य मेरे गुरुवर्य और शिवाजी विश्वविद्यालय के कला संकाय के अधिष्ठाता डा॰ वसंतराव मोरे जी ने किया है। मैं उनके प्रति सहृदयता से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए परिश्रम विद्यालय, दुंडगे के अध्यापक, डा॰घाळी महाविद्यालय हिंदी विभाग के प्रमुख डा॰डी॰के॰गोटुरी और प्रा॰भुकेले अन्य अधिव्याख्याता, राजा शिव-छत्रपती महाविद्यालय,कानडेवाडी के प्राचार्य एस्॰जी॰मुंज, क्रांतिसिंह नाना पाटील महाविद्यालय वाळवा, की प्राचार्या सौ॰नायकवडी मैडम, शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अन्य अधिव्याख्याता, क्लर्क, कर्मचारी आदि सहानुभूति से मुझे प्रोत्साहित करते थे। अत: उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इस लघु-शोध प्रबंध के लिए गुरुवर्य गोकाककरजी और ब॰बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर गणेश बुक सेंटर, पुणे ने समय-समय पर मुझे ग्रंथों की सहायता दी है। अत: उनका भी मैं ऋणी हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत अल्प समय में टंकलिखित करने का कार्य श्री॰चिंतामणी लोंढे ने किया है। उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

अत: टेढ़े-मेढ़े रास्ते से चलनेवाले बालक की तरह मेरा यह प्रयास रहा है। इसमें जो कुछ भी त्रुटियाँ हैं, उनका निराकरण करने का प्रयत्न तो कर चुका हूँ, फिर भी भूल से कुछ त्रुटियाँ रह जाने की संभावना है। अत: उन त्रुटियों का स्वीकार करते हुए आपसे क्षमा चाहता हूँ।

अंत में मैं उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा,प्रोत्साहन और सहायता दी है। उन सबका मैं आभारी हूँ।

कोल्हापुर
दि॰२९/१२/९३

30-12-93

शोध-छात्र